P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-6, ISSUE-4, May- Supplementary Issue - 2018
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

सम्राट औरंगजेब कालीन 'सतनामियों का विद्रोह का ऐतिहासिक अध्ययन

हरीश कुमार
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
महाराज विनायक ग्लोबल यूनीवर्सिटी,
जयपुर

सारांश

सतनामियों के विद्रोह के सन्दर्भ में लगभग सम्पूर्ण जानकारी तत्कालीन फारसी स्रोतों से उपलब्ध होती है। लेकिन सौभाग्यशाली सतनामी सम्प्रदाय और उनके विश्वासों (मतों) पर प्राथमिक स्रोतों के साथ–साथ सन्तनामी हस्तलिपि का मूल धार्मिक ग्रन्थ भी उपलब्ध है। कुछ विदेशी ऐतिहासकारों ने इस मूलग्रन्थ का नामकरण 'पोथी' से किया है। सतनामी एक अद्वैतवादी सम्प्रदाय से सम्बन्धित थे। ये 'बैरागी' और 'मुण्डिया' के नाम से भी सम्बोधित किये जाते थे, क्योंकि वे अपने सिर के सारे बाल कटा लेते थे और यहाँ तक कि अपनी भौएं भी साफ कर लेते थे। सतनामी मूलग्रन्थ से पता चलता है कि किसी व्यक्ति को दाढ़ी नहीं रखनी चाहिये, जबकि महिलाओं को बाल रखने चाहिए।

मुख्य शब्दः Add some keywords here.

प्रस्तावना

क्रुक और ग्रीयर्सन इस सम्प्रदाय की स्थापना की तिथि 1543 ई. बताते है।[1] किन्तु डा. आभासिंह ज्ञानवाडी के आधार पर मानती हैं कि यह सम्प्रदाय सर्वप्रथम 1657 ई. को अस्तित्व में आया था।[2] ये नारनोल और मेवात जैसे परगनों के छोटे–छोटे गांवों में रहते थे, इनके परिवारों की संख्या लगभग 4–5 हजार थी। ये सतनामी (मुण्डिया या बैरागी) फकीर के वस्त्रों में रहते थे और इनमें से अधिकांशतः अपनी जीविका एक कृषक या व्यापारी के रूप में छोटे–छोटे गांव में निवास करके व्यतीत करते थे। वे एक ईमानदार या भद्र पुरुष (अच्छा व्यक्ति) के जैसा जीवन व्यतीत करने का प्रयास करते थे, तो जो सम्भवतः इनकी उपाधि 'सतनाम' नामक शब्द से प्रतीत होती है। लेकिन यदि कोई उन्हें सैन्य बल से या कूटनीति से परेशान या पराजित करने की इच्छा रखता था तो वे कभी भी इसे अनदेखा या सहन नहीं कर पाते थे, और उनमें लगभग सभी अस्त्र–शस्त्र से युक्त हो जाते थे।

सकी मुस्तैद खान के अनुसार सतनामी अपने को सदैव ही निम्न श्रेणी में रखते थे। उनके अनुसार सतनामी एक गिरोह था, जिनमें बढ़ई, मेहतर, चमड़े का काम करने वाले और दूसरे निम्न कोटि का कार्य करने वाले व्यक्ति थे।[3] अबुल फजल मामूरी कहता है कि वे (सतनामी) अधिक संख्या में कृषक और व्यापारी थे जो छोटे–छोटे गांवों में अनाज का व्यापार करते थे।[4] डॉ. आभा सिंह के अनुसार–सतनामी सिद्धान्तों का विस्तारण 'सबद' और 'साखी' के रूप में किया गया है, जो साधु और संतों की धार्मिक गोष्ठियों में पढ़े जाते थे। इन उपदेशों के तत्व 'आदि उपदेश' नामक ग्रन्थ में संग्रहित किये गये थे, प्रथम उपदेश, जहाँ सबकुछ बारह 'हुकुमों' (आदेशों) में अनुक्रमित किया गया था।[5] ऐसा प्रतीत होता है कि सतनामी वर्ग अपनी कीर्ति या यश हेतु अधिक सावधान रहता था क्योंकि उन्होंने अपना नामकरण भी 'सतनाम' शब्द से किया था। जिसका तात्पर्य था 'अच्छा नाम' या 'सत्यनाम' सतनामियों की धर्म पुस्तक में अधिक बल 'सत्य' पर ही दिया गया है। सतनामी मूर्तिपूजा का खण्डन करते थे किन्तु प्रति दिन जुमलाघर (पूजाघर) में पुरुष व महिलाऐं एक साथ पूजा करते थे।[6] सतनामियों के धर्मशास्त्र से विदित होता है कि उन्होंने जातीय विशिष्टीकरण, संस्कारों, मिथ्या विश्वासों, तीर्थयात्रा, महोत्सवों, व्रत उपवास तथा जादू–टोनों का बड़ी दृढ़ता से विरोध किया था।[11] किन्तु समकालीन फारसी लेखक सतनामियों को जादू–टोना और इन्द्रजाल का अभ्यास करने के लिये उन्हें दोषी ठहराते हैं।[7]

सतनामी धर्मशास्त्र के अनुसार नाचना–गाना और किसी भी संगीत वाद्य को बजाना, मांस–पान हुक्का, तम्बाकू, अफीम और शराब पीने का निषेध था। ईश्वरदास नागर ने अपनी पुस्तक 'फुतुहाते–आलमगीरी' में निष्कर्ष निकाला

है कि– ''वे सुअर का मांस और दूसरी घृणित तथा अरूचिकर वस्तुएं खाते थे।'' और यहाँ तक कि यदि उन्हें कुत्ते का मांस भी खाने के लिये दिया जाता था तो भी वे किसी प्रकार की घृणा या लज्जा का प्रदर्शन नहीं करते थे। इन उपर्युक्त मिथ्या अभियोगों के लिए सतनामी धर्मशास्त्र में कोई न्याय नहीं किया गया है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि सतनामियों ने अपने धर्म या 'पन्थ' का दरवाजा सभी नीच, निम्न वर्ग या दास वर्ग के लोगों हेतु खोल रखा था। जो व्यक्ति पंथ सिद्धांतों के विरूद्ध कार्य करता था उसे कड़ी सजा दी जाती थी।[8] सतनामी धर्म ग्रन्थों के अनुसार एक पूर्ण और निश्चित राजनीतिक अवज्ञाओं को प्रोत्साहन देना यह प्रदर्शित करता है कि ये सन्त 'अन्यासी एवं दुष्ट राजाओं से मिलने नहीं जाते थे तथा धनी और भ्रष्ट लोगों से भी नहीं मिलते थे। ईश्वरदास नागर ने सतनामियों को अशुद्ध, घृणित तथा अधर्मी बताया है।[9] अबुल फजल मामूरी कुछ सत्य प्रमाण उनके बारे में देता है, लेकिन वह कहता है कि यदि कोई एक भी उन्हें निर्दयतापूर्वक या अस्त्र–शस्त्र से युक्त होकर पराजित करना चाहता था या कोई प्राधिकारी वर्ग पराजित करना चाहता था तो ये कभी भी सहन नहीं कर सकते थे, उनमें से लगभग सभी हथियार उठा लेते थे।[10] सतनामियों के आन्दोलन को सर यदुनाथ सरकार ने एक ''अलौकिक या दैवी शक्ति के लिये लौकिक पागलपन या सनक'' पुकारा है।[11] सतनामियों ने कभी भी अपने क्षेत्रीय अधिकारियों की अधीनता को स्वीकार नहीं किया। औरंगजेब के एक भूराजस्व अधिकारी के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि सतनामी सम्प्रदाय अपनी रक्षा के लिये अपने को हिंसा, डकैती, राजद्रोह एवं लोगों को प्रताड़ित करने में भी लगा सकते थे।[12] औरंगजेब के शासन के पन्द्रहवे वर्ष में सन् 1672 ई. में सतनामियों ने विद्रोह किया। विद्रोह के समय सतनामी नारनौल और मेवात परगनों के आस–पास पड़ौस में लगभग 4–5 हजार परिवारों की संख्या में निवास करते थे।

साहित्यावलोकन

देवी सिंह मंडावा : देशभक्त दुर्गादास राठौड़ प्रकाशक राजस्थानी ग्रन्थागार (प्रथम) माला गणेश मन्दिर के सामने सोजती गेट जोधपुर राजस्थान, वर्ष 2018 पृ0 99 इस किताब में लेखक ने औरंगजेब कालीन प्रमुख विद्रोहों का संक्षिप्त वर्णन किया है इसी पुस्तक से यह स्पश्ट होता है कि किस तरह राजपूत भी सतनामियों के विद्रोह से प्रभावित थे इसीलिए उन्होंने दिल्ली से दूर राजस्थान में मुगलों के विरूद्व विद्रोह की महान योजना बनाई थी।[13]

डॉ0 मौलवी शुजाउद्दीन खॉ नक्शवन्दी : औरंगजेब आलमगीर की कठिनाइयाँ एवं नीतियाँ (राजस्थान राज्य अभिलेखागार वीकानेर में सुरक्षित फारसी अभिलेखों पर आधारित पुस्तक) प्रकाशक कादरी एण्ड कम्पनी, नत्थू खॉ की टाल खैरपुर भवन के पास कमला कालौनी बीकानेर, राजस्थान, वर्ष 2014 पृ0 108 इस पुस्तक से स्पष्ट होता है कि किसी तरह से मुगल राजधानी के निकट सीधे साधे अर्दनग्न किसान जाति और साधु समाज के कुछ लोगों ने उत्पात मचा दिया था जिसको दवाने के लिए स्वयं समाट औरंगजेब को युद्व में नेतृत्व करना पड़ गया था। इस किताब में इस विद्रोह के प्रमुख कारण क्या थे इनका विस्तारपूर्वक उल्लेख मिलता है।

गौरीशंकर हीराचंद औझा : राजपूत कालीन संस्कृति (प्रकाशक राजस्थानी ग्रन्थागार सोजती गेट जोधपुर राजस्थान वर्ष 2015 पृ0 117) इस पुस्तक में स्पष्ट रूप से लिखा है कि दिल्ली के आस पास निवास करने वाली जातियाँ कैसी थी इसका संक्षिप्त वर्णन मिलता है। इस किताब से प्रमाणित होता है कि सतनामी प्राचीन काल से ही झगडालू प्रकृति के नहीं थे उनका सादा जीवन जीना ही मुख्य उद्देश्य था लेकिन यह जाति अपने स्वाभिमान प्रिय थी इनके स्वाभिमान से कोई छेडछाड करे यह उनको बिलकुल भी पंसद नहीं था।

डॉ0 श्यामसिंह रत्नावत : मुगल राजपूत सम्बन्ध (1526–1707 ई0) प्रकाशक रामकिशोर शर्मा गौतमबुक कम्पनी जी–4 महालक्ष्मी कॉम्पलैक्स 260/5 राजापार्क जयपुर 302004 वर्ष 2009 पृ0 96 इस पुस्तक से स्पष्ट होता है कि किस तरह से मुगल शासकों ने शक्तिशाली राजपूत राजाओं को अन्य हिन्दू जाति के विद्रोहों को दवाने के लिये नियुक्त कर रखा था राजपूत शासकों को भी बड़ आनन्द आता था अपने सगे हिन्दू भाईयों का रक्त बहाने में प्रत्येक राजपूत शासक जितने अधिक हिन्दूओं का रक्त बहाता था उसे मुगल राज दरवार में उतनी ही बड़ी पदवी मिलती थी ऐसा इस किताब से प्रमाणित होता है।

डॉ0 आभा सिंह : सतनामी और उनका विद्रोह नामक शोध पत्र प्रकाशक शोध अक्षरा S.V. College Aligarh वर्ष 2013 पृ0 110 इस शोध पत्र से स्पष्ट होता है कि इस तरह से इस विद्रोह में सतनामियों का साथ उनकी महिलाओं ने दिया था और मुगल सैना के विरूद्ध हुए युद्ध में कई स्थानों पर सतनामी महिलाओं ने युद्ध का संचालन भी किया था। इस विद्रोह में समनामी पुरूषों के साथ साथ महिलाओं का योगदान भी था।

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्रोह का प्रारम्भ नारनौल के एक पदाति सैनिक के साथ विवाद से शुरू हुआ, जो गांव की कृषि का निरीक्षण कर रहा था, और उसके द्वारा ही एक कृषक (सतनामी) जो अपने खेत पर काम कर रहा था, के सिर पर प्रहार करके चोट पहुंचायी गयी। इसके पश्चात सतनामियों का एक बड़ा समूह इकट्‌ठा हुआ और वे उस पदाति सैनिक को तब तक मरते रहे जब तक वह मर नहीं गया। जब उस गांव के शिकदार को इसकी सूचना मिली तो उसने अपनी एक सेना सतनामियों के विरूद्ध भेजी। जिसे सतनामियों ने हरा दिया इसके वाद तक बड़ी मुगल सेना ने कुछ सतनामियों को पकड़ा। साकी मुस्तैद खान का मानना है कि उधव बैरागी अपने दो राजपूत शिष्यों के साथ फांसी पर चढ़ा दिये गये, उन्होंने सन् 1669–70 ई. में काजी अबुल वहाब के पुत्र की हत्या कर दी थी।[19]
2. इस प्रकार ससैन्य संघर्ष सतनामियों और मुगलों के मध्य प्रारम्भ हो गया। सतनामियों के विद्रोह का

प्रमुख कारण अने अधिकारों और सम्प्रदायों की रक्षा ही था।

3. इस संघर्ष के शुरूआती दौर से ही पता चलता है कि सतनामी किसी मुगल अधिकारी की अधीनता स्वीकार नहीं करना चाहते थे, अपने क्षेत्र विशेष में अपना वर्चस्व बनाये रखना चाहते थे।
4. इस प्रकार हम देखते है कि कुछ पारम्परिक (जो कि संदिग्ध मूल्य था) जुड़ाव, उधव बैरागी और वीरभान के मध्य था, जो सतनामी सम्प्रदाय का अन्वेषक था। यदि ऐसा था तो उधव बैरागी को फांसी दिया जाना भी सतनामियों का मुगल शासन के विरूद्ध कड़वापन का कारण था।
5. सन् 1671–72 ई. के लगभग मुगल सम्राट औरंगजेब के पास इस विद्रोह से निपटने हेतु केवल दस हजार की ही सेना थी क्योंकि मुगल सेना के मुख्य दस्ते को दक्षिण भारत में शिवाजी के विरूद्ध शाहआलम के साथ विजय अभियान के लिये भेज दिया गया था। मनूची कहता है कि सतनामियों ने मुगल साम्राज्य की इस कमजोरी को देखते हुये उत्साहित होकर विद्रोह को चुनौती के रूप में लिया और उन्होंने राजधानी की तरफ प्रस्थान किया।[14]

शोध परिकल्पना

किसी भी शोध पत्र की प्रत्याशा ही कहीं जा सकती है, परिकल्पना शोध पत्र को केन्द्रित करती है एवं उसे दिशा–निर्देश प्रदान करती है। इस शोध पत्र में मुख्य शोध परिकल्पनाओं का सहारा लिया जायेगा।

1. सतनामी समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।
2. क्या सतनामी आन्दोलन में सतनामी महिलाओं ने भी सहयोग किया था इसका अध्ययन करना।
3. सतनामी लोग और उनके आसपास राजाओं से सम्बन्ध आदि।
4. सतनामी समाज के रहन सहन का अध्ययन करना।

शोध विधि

शोधार्थी इस शोध पत्र के शोध अनुसंधान की विश्लेणात्मक एवं ऐतिहासिक पद्धतियो का उपयोग करेगा साथ ही इस शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षाणत्मक तुलनात्मक एवं संकल्पनात्मक शोध विधियों को भी अपनाया जायेगा जिनके माध्यम से सकारात्मक रूप से अपने सत्यावेषण के अंतिम निष्कषों से प्राप्त होगा यह शोध पत्र पूरी तरह से ऐतिहासिक है।

नेतृत्व सतनामियों के विद्रोह का नेता और इतिहास

सतनामियों की सेना के नेतृत्व के विषय में काफी विवाद है। ईश्वरदास नागर ने सतनामियों के नेता के रूप में 'घारीब दास हाड़ा' का नाम बताया है। यहां यह प्रतीत होता है कि राजपूत हाड़ा का सतनामियों से कुछ प्राचीन सम्बन्ध था और इनकी सेना इतनी शक्तिशाली थी कि इन लोगों पर तलवार तथा हथगोले और तीर आदि के आक्रमण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था।[15] अबुलफजल मामूरी ने भी इनके नेतृत्व के बारे में कुछ विवरण दिया है, जो पूर्णतया अविश्वसनीय प्रतीत होता है। उसके अनुसार सतनामियों ने जादू से एक लकड़ी को घोड़ा बनाया जिस पर एक औरत को बठाया और वही उनके सेना का नेतृत्व करती थी मनूची ने भी इसी प्रकार की घटना का वर्णन किया है।[16] यद्यपि ये केवल इतिहासकारों के विवरण काल्पनिक विवरण और सतनामियों के धार्मिक उन्माद को प्रकट करता है, तथा सेना का नेतृत्व महिलायें करती थीं, इसे भी पूरी तरह से स्पष्ट करता है। समकालीन इतिहासकारों के विवरण से ज्ञात होता है कि सतनामियों के विद्रोह में महिलाओं का नेतृत्व भी शामिल था। इस प्रकार इनके वास्तविक नेता का प्रमाणीकरण बड़ी मात्रा में अन्धकारपूर्ण प्रतीत होता है। लेकिन सतनामियों ने अपनी शक्ति को बड़ी तीव्रता से आगे बढ़ाया, इन्होंने आकस्मिक आक्रमण करके स्थानीय अधिकार 'शिकदार' को हरा दिया, और पुनः परगना के आस–पास के गांवों पर धावा बोल दिया।[17] एवं उनमें से अनेक पर अधिकार कर लिया।[18] जब उसके बारे में नारनौल के फौजदार 'ताहिरखान' को पता चला, तो उसने एक के बाद दूसरी लगातर बड़ी संख्या में पैदल तथा घुड़सवार सैनिकों की सेवा भेजा, लेकिन उनको भी सतनामियों के द्वारा बड़ी सफलतापूर्वक पराजित किया गया। फौजदार भाग गया और सतनामियों ने नारनौल तथा वैराट सिंघाना के कस्बे पर शीघ्रता से कब्जा कर लिया। ईश्वरदास नागर कहते है कि सतनामियों ने उन कस्बों के निवासियों की सम्पत्तियों पर कब्जा कर लिया और वहां के अनेक मस्जिदों तथा गुम्बदो को भी क्षत–विक्षत कर दिया। उन्होंने उन गांवों में अपना प्रशासन स्थापित किया तथा कर की भी उगाही की।[19] अपनी विजय की खुशी मनाते हुये सतनामियों ने दिल्ली तक अपना धावा बोला। वहां भी साम्राज्यिक शक्तियों की चुनौती का प्रत्यक्ष रूप से सामना किया। उनके दिल्ली पर अधिकार करने के बाद, सभी वस्तुओं और अनाजों का दाम तेजी से बढ़ गया और राजधानी दिल्ली के निवासियों को अत्यधिक पीड़ा कारक स्थितियों का सामना करना पड़ा। इसी समय उपद्रव की अस्त व्यस्तता का लाभ उठाते हुये कुछ पड़ोसी राजपूत और जमींदार भी विद्रोहियों के साथ मिल गये और भूमिकर देने से इन्कार कर दिया। औरंगजेब ने अब स्वयं ही विद्रोह का दमन करने के लिये ''प्रसिद्ध राजाओं और अनुभवी सामंतों के अधीन एक सेना भेजी।

15 मार्च सन् 1672 ई. को औरंगजेब ने साम्राज्य की सेनाओं को सतनामियों पर आक्रमण करने का आदेश दिया। इसी सेना में मुख्य सेनानायक रदन्दाज खान को तोपों के साथ शामिल कर लिया गया, हामिद खान को खास चौकी की सेना के साथ और उसके पिता मुर्तजा खां की 500 सैनिकों की सेना को, याह्या खान, नाजिब खान दिलेर खान के पुत्र कमालुद्दीन, पुरदिल, फिरोज खान मेवाती का पुत्र असफन्दियार बख्शी, राजकुमार अकबर अपनी सेनाओं के साथ, कुंवर किशन सिंह और सर्मस्थ खान आदि को सेना में शामिल कर लिया गया। इस प्रकार मुगल साम्राज्य की 10,000 घुड़सवारों की सेना ने सतनामियों के उपद्रव को शान्त करने के लिये कूच किया।20 किसी भी स्रोत से हमें बिल्कुल सही स्थान के बारे में जानकारी नहीं मिलती है, जहाँ पर यह विद्रोह

अन्तिम रूप से लड़ाई के रूप में लड़ा गया था। लेकिन जैसा कि मामुरी के द्वारा बताया गया है, यह स्थान संभवतः दिल्ली से 16 कुरोह (लगभग 35–40 मील की दूरी) की दूरी पर कहीं स्थित था। निकोल्सन मनूची ने स्थान के बारे में लगभग प्रमाणित स्थिति के बारे में बताया है जो दिल्ली से 15 लीग की दूरी पर स्थित थी। लीग को उसने संभवतः कोस या कुरोह के समकक्ष माना था।[21]

सतनामियों ने इस युद्ध में मुगलों का दृढ़तापूर्वक सामना करने का निश्चय किया और अन्ततः युद्ध में सतनामी पूर्ण रूप से असफल हुये थे। उनके युद्ध में लगभग 1000 सैनिक मारे गये थे। मनूची के अनुसार– ''कुछ पुरानी जादूगरनियां बच गयी थी गरीब दास हाड़ा नेता प्रथम आक्रमण में ही मारा गया था।[22] ईश्वरदास नागर के अनुसार सतनामी लगभग 3000 मारे गये जबकि साम्राज्य की सेना में केवल 200 जीवों की मृत्यु हुयी थी। साकी मुस्तैद खान ने युद्ध की प्रबलता का वर्णन करते हुये लिखा है कि सतनमी इतनी बहादुरी से लड़े कि ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने महाभारत के युद्ध के दृश्य को पुनः दुहरा दिया है।''[23] साम्राज्य की तरफ से कुंवर किशन सिंह हामिद खान, मुर्तजा खान का पुत्र तथा अन्य दूसरे वीरता से लड़े। युद्ध के दौरान किशन सिंह के हाथी ने सात तलवारों की चोट खायी थी।[24] समर्थन खान[25] ने भी इस युद्ध में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। युद्ध में अपने कार्यों के लिये रदन्दाज खान को सुजात खान की पदवी से विभूषित किया गया और उसने 3500 का मनसब (2000 नामदार) प्राप्त किया। हामिद खान, याह्या खान, रूमी खान, नाजिब खान के अतिरिक्त सभी बड़े और छोटे अधिकारियों ने पदोन्नति और अच्छी अच्छी उपाधियां प्राप्त की।[26] ऐसा प्रतीत होता है कि भयंकर वध ने विद्रोहियों को पीछे हटने के लिये बाध्य कर दिया और वह क्षेत्र साम्राज्यिक शक्तियों द्वारा शान्त करा दिया गया।[27] उसके पश्चात् मामूरी और खाफी खान ने अपने विवरणों में सतनामियों के उन्हीं स्थानों पर होने का उल्लेख किया है, जो काफी समय तक छोटे कृषक और व्यवसायिक समुदाय के रूप में ही स्थिर रहे।[28]

निष्कर्ष

इस विद्रोह का स्वरूप अत्यधिक विवादास्पद और दिलचस्प है। कुछ इतिहासकारों ने इस विद्रोह के लिये ''हिन्दू प्रतिक्रिया'' शब्द का प्रयोग किया है।[29] वे कहते हैं कि– ''इन झगड़ों ने शीघ्र ही धार्मिक रंग ले लिया और ऐसा प्रतीत होता है कि औरंगजेब के आक्रमण से हिन्दुओं की स्वतंत्रता को बचाने हेतु ही यह युद्ध हुआ था।'' ईश्वरदास नागर के द्वारा प्रस्तुत केवल एक सन्दर्भ में धार्मिक उत्साह का पता चलता है– जब उसने कहा है कि, उस विद्रोह में नारनौल के मस्जिद और गुम्बद ध्वस्त किये गये।[30] जबकि सतनामियों के धार्मिक ग्रन्थ ने स्वयं भी हिन्दुओं और तुर्कों (मुसलमानों) के किसी वर्ग से होने का प्रमाण स्पष्ट नहीं किया है।[30] सतनामी हिन्दुओं के अन्धविश्वासों और धार्मिक संस्कारों का विरोध करते थे। डॉ. आभा सिंह ने सतनामी मूल धार्मिक ग्रन्थ के आधार पर स्पष्ट किया है कि– ''न तो पण्डित और न काजी जानता है कि दयालुता सत्यादेश (धर्म) और सत्य क्या है। उन सबके बावजूद उनका हिन्दू समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वालों के रूप में वर्गीकृत करना सही नहीं है। ईश्वरदास नागर ने स्वयं उनको अपवित्र और घृणित बताकर हिन्दू समुदाय के बाहर का बताया है। इस प्रकार विद्रोह के लिये तत्कालिक कारण धर्म की प्रकृति से प्रेरित नहीं था। किन्तु यह सत्य उभरकर हमारे सामने आता है कि सतनानियों का क्षोभ या विद्रोह अपने शोषण के विरूद्ध तथा स्थानीय अधिकारियों (फौजदार, सिकदार) के क्रूर शासन के विरूद्ध था।

इस विद्रोह का प्रभाव यह हुआ कि उसने अपने अधीन न केवल सतनामियों को ही उलझाया, बल्कि इस क्षेत्र के सभी किसान, जमीदार और राजपूत भी सतनामियों का हाथ पकड़कर उसके साथ विद्रोह में शामिल हो गये, यानि कि सतनामियों के उग्र होने से प्रेरित होकर अन्य वर्ग के लोग भी अपने–अपने क्षेत्र में मुगल साम्राज्य के विरूद्ध हो गये। इस प्रकार से, यह कृषक विद्रोह के अधिक निकट था न कि धार्मिक आन्दोलन के। इस तरह मुगलों के विरूद्ध हिन्दू एकता का आरम्भ हो चुका था।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *क्रूक, 4, 245, विल्सन 197, डा. आभा सिंह लेख, सतनामी और उनके विद्रोह*
2. *ज्ञानवाणी 1 ए, 51 बी, उद्धृत आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह*
3. *खान साकी मुस्तैदखान–मआसिर–ए–आलमगीरी 114–115 (मूलग्रन्थ फारसी से हिन्दी अनुवाद), इरफान हबीब ने अपनी पुस्तक–दि एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इंण्डिया, पृ.सं. 374 में 'जारंगार' (सोमार) को बारगाह किसान को पढ़ने का सुझाव दिया है।*
4. *अबुलफजल मामुरी 148 बी, खाफी खान 2, 252, उद्धृत डा. आभासिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह*
5. *विल्सन 197, हैस्टिंग्स, 11 46, 47, उद्धृत डॉ. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह*
6. *क्रूक, 4, 246, हौस्टिंस 9, 46–47, डॉ. आभा सिंह–सतनामी और उनके विद्रोह*
7. *ज्ञानवाणी– 36ए, 36बी, 39ए–बी., 25–26बी, 40बी, नागर ईश्वरदास–फुतुहाते आलमगीरी–146, डॉ. आभा सिंह–सतनामी और उनके विद्रोह*
8. *नगर ईश्वरदास–फुतुहाते–आलमगीरी 61 बी, मामुरी–148ए, खाफी खां, 2, 253, उद्धृत डा. आभा सिंह–सतनामी और उनके विद्रोह*
9. *ज्ञानवाणी 31बी, 39 ए–बी, उद्धृत डॉ. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह*
10. *ज्ञानवाणी 40ए, उद्धृत डॉ. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह*
11. *नागर ईश्वरदास–फुतुहाते–आलमगीरी– 61बी, सर्अद अनीस जहांन– औरंगजेब–इन–मुन्तखब उल–लुवाब, पृ.सं. 273*
12. *मामूरी, 148बी, खांफी खां, 2, 252, साकी मुस्तैद खान, मआसिर–ए–आलम गीरी (अनुवाद), अनीस जहांन सईद–औरंगजेब–इन–मुन्तखब–उल–लुवाब, पृ.सं. 274*

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-6, ISSUE-4, May- Supplementary Issue - 2018
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

13. डॉ. सरकार यदुनाथ, हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, भाग 4, पृ.सं. 29
14. बल्करी शान ब्राह्मण–56ए–बी (द्वारा लिखित पत्र) उद्धृत डा. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह
15. साकी मुस्तैदखान–मआसिर–ए–आलमगीरी–(अनुवाद) पृ.सं. 84–85
16. मनुची (स्टोरियो डि मोगोर), पृ.सं. 156, उद्धृत डॉ. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह
17. ईश्वर दास नागर–फुतुहाते–आलमगीरी–62 ए, उद्धृत डॉ. आभा सिंह, अलीगढ़, लेख, सतनामी और उनके विद्रोह
18. मनुची निकोल्सन स्टोरिया–डि–मोगोर, पृ.सं. 156, उद्धृत डॉ. आभा सिंह–लेख सतनामी और उनके विद्रोह
19. खान मुस्तैदखान–मआसिर–ए–आलमगीरी–115, डॉ. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह
20. नागर ईश्वरदास–फतुहाते–आलमगीरी–62ए
21. नागर ईश्वरदास–फुतुहाते–आलमगीरी 52ए, 62ए, अबुलफजल मामुरी–अकबरनामा–148बी, खाफी खान 2,253 उद्धृत डा. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह
22. खान साकी मुस्तैद–मासिर–ए–आलमगीरी–115, नागर ईश्वरदास–फुतुहाते– आलमगीरी 63 बी सईद अनीस जहां–औरंगजेब इन मुन्तखब उललुवाब पृ.सं. 274–75
23. मनुची (स्टोरियो डि मोगोर), पृ.सं. 156, उद्धृत डॉ. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह
24. नागर ईश्वरदास फुतुहाते–आलमगीरी, 63 बी, उद्धृत डॉ. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह
25. खान साकी मुस्तैद–मासिर–ए–आलमगीरी–116, उद्धृत सईद अनीस जहां– औरंगजेब इन मुन्तखब उल लुवाब, पृ.सं. 274
26. खाफी खां–मुन्तखव उल लुवाब, 2, पृ.सं. 254, डॉ. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह
27. आलमगीरनामा–54–55, डा. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह
28. तारीख–ए–मखजान–ए–अकबर उद्धृत डॉ. आभा सिंह लेख–सतनामी और उनके विद्रोह
29. खाफी खाँ–मुन्तखव उल लवाब, 2, पृ.सं. 254 डॉ. आभा सिंह लेख–सतनामी और उसके विद्रोह
30. अबलु फजल मामुरी–148 बी, खाफी खां, 2, 252–54, डॉ. आभा सिंह लेख सतनामी और उनके विद्रोह